ही सम्पूर्ण भोजन प्राप्त होता है। जड़ को सींचने से सम्पूर्ण वृक्ष का और उदर-पूर्ति से सम्पूर्ण शरीर का पोषण हो जाता है। यदि शरीर को स्वस्थ रखना है तो शरीर के सब अंग-प्रत्यंगों को उदर-पूर्ति करने में सहयोग करना होगा। इसी भाँति श्रीभगवान् स्रष्टा और भोक्ता हैं, अतएव उनके आश्रित हम सभी जीवों से अपेक्षित है कि हम उनके सन्तोष के लिए सहयोग करें। यदि हम ऐसा करें तो वस्तुतः हमें ही लाभ होगा, जैसे उदर में पहुँचे आहार से शरीर के अन्य सभी अंगों का पोषण होता है। हाथ की अंगुलियाँ स्वयं भोजन नहीं कर सकतीं। सृजन और भोक्तापन के केन्द्र परमेश्वर श्रीकृष्ण हैं, जीव तो उनके सहयोगी मात्र हैं। वे सहयोग से भोगते हैं। परमेश्वर और जीव का पारस्परिक सम्बन्ध स्वामी-सेवक जैसा है। स्वामी के पूर्ण सन्तुष्ट हो जाने से सेवक का सन्तोष अपने-आप हो जाता है। इसी प्रकार यद्यपि संसार को प्रकट करने वाले श्रीभगवान् की भाँति जीव भी प्राकृत-जगत् का स्रष्टा और भोक्ता बनना चाहता है, परन्तु श्रीभगवान् को प्रसन्न करने में ही उसका यथार्थ कल्याण सन्निहित है।

इस भगवद्गीता शास्त्र से हमें यह ज्ञात होता है कि पूर्ण तत्त्व में परमेश्वर, जीव, प्रकृति, महाकाल तथा कर्म का समावेश है। ग्रन्थ में इन सभी तत्त्वों का विवेचन है। इन सब तत्त्वों के पूर्ण समावेश से पूर्ण तत्त्व बना है, जो परम सत्य परब्रह्म है। भगवान् श्रीकृष्ण साक्षात् पूर्ण परतत्त्व अथवा परम सत्य हैं। सम्पूर्ण सृष्टि उन्हीं की विविध शक्तियों का कार्य है। अस्तु, वे ही पूर्ण परतत्त्व (परब्रह्म) हैं।

गीता में निर्विशेष ब्रह्म को भी पूर्ण परतत्त्व श्रीकृष्ण के आश्रित बताया गया है। 'ब्रह्मसूत्र' में ब्रह्मतत्त्व का अधिक स्पष्ट विवरण है। वहाँ इसे सूर्य से निस्सृत किरणराशि की उपमा दी गई है। निर्विशेष ब्रह्म श्रीभगवान् की देदीप्यमान ज्योति है। बारहवें अध्याय में उल्लेख है कि निर्विशेष ब्रह्म तथा परमात्मा के ज्ञान से परम सत्य की केवल अपूर्ण अनुभूति होती है। वहाँ यह भी उल्लेख है कि भगवान् पुरुषोत्तम, निर्विशेष ब्रह्म और परमात्मा रूपी आंशिक तत्त्वानुभूति, इन दोनों से अतीत हैं। इसी से उन्हें सच्चिदानन्द-विग्रह कहा जाता है। 'ब्रह्मसंहिता' का प्रारम्भ इस प्रकार है, **ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारण-कारणम्।।** श्रीकृष्ण सब कारणों के परम कारण आदिपुरुष हैं। उनका श्रीविग्रह मूर्तिमान् सच्चिदानन्दघन है। निर्विशेष ब्रह्म-प्राप्ति से उनके 'सत्' अंश की अनुभूति होती है और परमात्मा स्वरूप के ज्ञान से 'चित्' अंश (शक्ति) की ही अनुभूति होती है। किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण की प्राप्ति हो जाने पर तो सच्चिदानन्द के सम्पूर्ण विग्रह का साक्षात्कार हो जाता है।

अल्पज्ञ मनुष्य परम सत्य को निराकार-निर्विशेष मानते हैं, जबकि यथार्थ में वे दिव्य पुरुष हैं, जैसा सम्पूर्ण वेदों से प्रमाणित है— **नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतना-नाम्।** जिस प्रकार हम सब जीवों का निजी शाश्वत् स्वरूप है, उसी प्रकार परम सत्य भी अन्ततः एक पुरुष-विशेष ही हैं। अतएव भगवान् की प्राप्ति हो जाने पर